Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 17, (2022) 67-72 DOI: https://doi.org/10.51220/hjssh.v17i1.10

Manav Dharma: In the Perspective of Memories

Rekha Nautiyal*

Department of Sanskrit, S D M Government PG College Doiwala Dehradun

*Corresponding author email id: rekha.uki112@gmail.com

Received: 4.12.2022; Revised and Accepted: 29.12.2022
©Society for Himalayan Action Research and Development

Abstract: Smriti Shastras have a special place of their own in Sanskrit literature. Smriti Granth motivates a person to walk on the path of Dharma. Smriti texts have a special place in our lives in keeping social systems stable and proving social customs, traditions and social beliefs religious. Although Smriti Granths have been established and composed in the perspective of ancient systems, they are relevant even today because they were created by philosophers, poets, sages and great sages whose main aim was the welfare of the society. Today's person is suffering from narrow thoughts like religion-caste, rich-poor, big-small etc. and has polluted the society. In Smritis, the true religion is considered to be the one which has true patience, forgiveness, mercy and good conduct because in reality this is the true definition of religion. Manav Dharma mentioned in Manusmriti is relevant and inspiring even today.

Keywords: Memory, Society, Religion, Culture

मानव धर्म –स्मृतियों के परिप्रेक्ष्य में

रेखा नौटियाल

संस्कृत विभाग रा० डु० म० रा० स्ना० महा० डोईवाला देहरादून

सारांश

संस्कृत साहित्य में स्मृति शास्त्रों का अपना एक विशिष्ट स्थान है। स्मृति ग्रन्थ व्यक्ति को धर्म मार्ग पर चलने लिए प्रवृत्त करते हैं। सामाजिक –व्यवस्थाओं को स्थिर रखने तथा सामाजिक रीति –रिवाजों, परम्पराओ एवं सामाजिक मान्यताओं को धर्म –सम्मत सिद्ध करने में स्मृति ग्रन्थों का हमारे जीवन में एक विशिष्ट स्थान है। स्मृति ग्रन्थ यद्यपि प्राचीन – व्यवस्थाओं के परिप्रेक्ष्य में प्रतिष्ठापित एवं रचे गये, परतुं वे आज भी प्रासंगिक हैं। क्योंकि इनकी रचना तत्ववेत्ता ऋषियों एवं महर्षियों ने की है, जिनका मुख्य ध्येय ही समाज का कल्याण था। आज का व्यक्ति धर्म, जाति, अमीर–गरीब, छोटे–बडे आदि तुच्छ संकीर्ण विचारों से ग्रसित होकर समाज को दूषित कर रहे हैं। स्मृतियों में सच्चा धर्म उसे माना है, जिसमें सत्य, धैर्य, क्षमा, दया और सदाचार हो क्योंकि वास्तव में धर्म की यही सच्ची परिभाषा है। मनुस्मृति में वर्णित मानव धर्म आज भी प्रासंगिक एवं प्रेरक है।
संकेत शब्दः – स्मृति, समाज, धर्म संस्कृति

स्मृतियों का रचनाकाल : इस प्रकार यद्यपि स्मृति ग्रन्थों के प्रणेता अनेक हैं पर उनमें मनु याज्ञवल्क्य, अग्नि, नारद, अंगीरस, विष्णु, यम, आपस्तम्ब, वशिष्ठ, अत्रि, अंगिरा,गौतम, दक्ष, वृहस्पति आदि प्रमुख है। इन स्मृतियों का उद्देश्य धर्म का वास्तविक तथा पूर्ण ज्ञान कराना है। इसी कारण स्मृतिशास्त्रों को **"धर्मशास्त्र"** कहा गया है। वैसे तो उपरोक्त ऋषियों या देवताओं द्वारा प्रणीत सभी स्मृतियों का माहात्म्य है लेकिन इनमें से विशेष रूप से मनु द्वारा प्रणीत मनुस्मृति तथा याज्ञवल्क्यस्मृति ही प्रसिद्ध है क्योंकि इसका वर्ण्य–विषय सर्वांगीण एवं सर्वव्यापक

होने के साथ–साथ मानव मात्र की स्थिति को दृढ करने एवं उसको सन्मार्ग पर चलनें के लिए प्रेरित करने में परम उपयोगी है।

स्मृतिकाल के विषय में निश्चित रूप से लिखना तो कठिन है पर इतिहासकारों ने स्मृतिग्रन्थों के निर्माण की अवधि को तीन भागों में विभाजित किया गया है –

प्रथम युग : 600 – 100 ई0 पू0 तक
द्वितीय युग : 100 – 800 ई0 पू0 तक
तृतीय युग : 900 – 1800 ई0 पूर्वतक

प्रथम युग में धर्मसूत्रों का निर्माण हुआ। द्वितीय युग मे धर्मसूत्रों की व्याख्या वाले ग्रन्थों की रचना हुई तथा तृतीय युग मे धर्मसूत्रों को सरल एवं बोधगम्य बनाने के उद्देश्य से स्मृति–ग्रन्थों की रचना हुई। ये सभी स्मृति–ग्रन्थ श्लोकों में निबद्ध हैं। तृतीय युग धर्म–ग्रन्थों एवं स्मृति–ग्रन्थों के विकास का युग माना जाता है। इस युग में मध्य काल में रचे गये स्मृति–ग्रन्थो पर अनेक टीकाओं एवं भाष्यों का निर्माण हुआ।

स्मृतियों की संख्याः स्मृतियों की निश्चित रूप संख्या पर्याप्त हैं, लेकिन मुख्यतयः वर्तमान में विशेष रूप से स्मृतियों की संख्या बीस मानी जाती है, जो जिस मुनि ने लिखी वह उसी नाम से जानी जाती हैं जो इस प्रकार हैं–

1 मनु–स्मृति
2 याज्ञवल्क्य–स्मृति
2 अत्रि –स्मृति
4 विष्णु–स्मृति
5 हारीत–स्मृति
6 उशनस–स्मृति
7 व्यास –स्मृति
8 यम –स्मृति
9 भृगु–स्मृति
10 कात्यायन –स्मृति
11 वृहस्पति –स्मृति
12 पराशर – स्मृति
12 न्यास – स्मृति
14 दक्ष –स्मृति
15 गौतम –स्मृति
16 वशिष्ठ –स्मृति
17 नारद – स्मृति
18 अंगिरा –स्मृति
19 शातातप – स्मृति
20 आपस्तम्ब–स्मृति

स्मृति ग्रन्थों को धर्म–शास्त्र के अन्तर्गत ही माना जाता है। धर्म– शास्त्रों में जिन मानवीय कर्तव्यों का प्रतिपादन किया गया है, उनके व्याख्याता ग्रन्थ में स्मृति ग्रन्थ भी हैं। मनुस्मृति में लिखा भी है– **"श्रुतिस्तुवेदोविज्ञेयो धर्मशास्त्रं तुवैस्मृतिः"** अर्थात् जिनके द्वारा वैदिक धर्मों का स्मरण एवं प्रतिपादन किया जाता है, उन लिपिबद्ध रचनाओं को 'स्मृति' कहते हैं। धर्मशास्त्र व स्मृति ग्रन्थों का निर्माण हिन्दू धर्म के चरम विकास का सूचक है। प्रचीन भारतीय साहित्य में '**श्रुति**' और '**स्मृति**' शब्द का अनेक बार प्रयोग हुआ है। श्रुति और स्मृति ये दोनों शब्द व्यापक अर्थ के पर्यायवाची हैं। श्रुतियों में वेद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद आदि ग्रन्थों का बोध होता है। इसी प्रकार स्मृतियों के अर्न्तगत षड्वेदांग, धर्मशास्त्र, इतिहास, पुराण, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र आदि ग्रन्थ आते हैं। लेकिन बाद में ग्रन्थकारों ने स्मृति शब्द को धर्मशास्त्र का पर्यायवाची मानकर स्मृतियों को पृथक स्थान प्रदान

कर दिया। स्मृति शब्द की व्युत्पत्ति का आधार भी यही अर्थ है – '**स्मर्यतेवेद धर्मोऽनेनेति–स्मृतिः**।'वास्तव में मानव – धर्मों का प्रतिपादन ही स्मृति – ग्रन्थों का वर्ण्य विषय है। इस प्रकार स्मृति ग्रन्थों को धर्मशास्त्रों के रूप में जाना जाने लगा।

स्मृति ग्रन्थों में मानव–धर्म – प्राचीनकाल से ही भारतीय जन–जीवन में आचार– विचार सम्बन्धी संस्कारों की परम्परा रही है। वेदों से लेकर सम्पूर्ण वाङ्मय का एक बहुत बडा भाग इन्हीं धर्म–कर्मो का प्रतिपादन करता रहा हैं। वैदिक संहिताओं के पश्चात् होने वाले ब्राह्मण – ग्रन्थों का निर्माण ही इन धर्म–कर्म सम्बन्धी प्रकरणों के अनुशीलन–परिशीलन करते हुए बीता। हिन्दु समाज की रचना अनेक आर्य और आर्येत्तर जातियों के समन्वय से हुई, उन जातियों के धर्म और संस्कृति भी अलग–अलग थी। हिन्दु धर्म अनेक धर्मों तथा संस्कृतियों का समन्वयात्मक रूप है। इसी तरह वैदिक वाङ्मय, रामायण, महाभारत, पुराण आदि ये सभी ग्रन्थ हमारे दैनिक जनजीवन में होने वाले उचित धर्म–कर्म सम्बन्धी आचार–विचार सम्बन्धी तथ्यों को उद्धृत करते हैं। इसी तरह हमारी पवित्र स्मृतियों में भी भारतीय जीवन की आदर्श शैली को क्रमबद्ध किया है। प्रचीनकाल से ही सुव्यवस्थित समाज के लिए जो नियम निर्वाहित थे उन नियमों पर स्मृतियों ने मुहर लगाकर अन्तिम रूप से प्रमाणित किया। धर्म का शाब्दिक अर्थः धर्म एक ऐसा शब्द है, जिसका प्रयोग संस्कृत साहित्य में विविध अर्थो मे हुआ है तथा यह भी नहीं कहा जा सकता है कि धर्म का एक निश्चित अर्थ है। धर्म चार प्रकार का माना गया है, वे हैं – आचार, व्यवहार, प्रायश्चित तथा कर्मफल। इन चारों धर्मों का ब्राहाण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र इन चारों वर्णों तथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास इन चारों आश्रमों का प्रत्येक व्यक्ति को पालन करना अनिवार्य था। मनुस्मृति में उल्लेख भी किया गया है –

वेदस्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षात् धर्मस्य लक्षणम्।।[1]
श्रुतिः क्षमादमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्यासत्यमक्रोध्दशकंधर्मलक्षणम्।।[2]

अर्थात् मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षणों का उल्लेख है कि संतोष, क्षमा, मन को वश में रखना, न्यायपूर्वक धन लेना, पवित्रता, इन्द्रियों को वश में रखना, अन्तः बाह्य पवित्रता, बुद्धि, विद्या, सत्य तथा क्रोध न करना हैं। पराशरस्मृति में पराशर जी ने कहा है कि धर्म किसी व्यक्ति, जाति या देश के लिए नहीं अपितु मानवमात्र के लिए बताया गया परम कल्याण का मार्ग है। पराशर द्वारा प्रतिपादित धर्म अक्षरशः सत्य, पवित्र, पापनाशक व आचरणीय है**– 'पाराशरमतं पुण्यं पवित्रम पापनाशनम्** '।[3] आचार्य ने आचार को बहुत ही प्रमुख माना है। आचार से भ्रष्ट व्यक्ति धर्म से दूर चला जाता है।

स्मृतियों में मानव–धर्म एवं आचार–व्यवहार, प्रायश्चित तथा कर्मफल आदि कर्तव्यों का विवेचन किया गया है। स्मृतियों में मनुष्य के लिए विभिन्न संस्कारों, चारों आश्रमों तथा चारों वर्णों के कर्तव्यों तथा अन्य सामाजिक नियमों, गुरू–शिष्यों के सम्बन्धों का विशद निरूपण मिलता है। आदर्श गृहस्थ जीवन का भी इनमें विशद विवेचन प्राप्त है। मानव धर्म की व्याख्या– विभिन्न धर्मों के संकीण विचारधारा या मनोवृत्ति के कारण समाज में हिंसा और द्वेष का वातावरण निर्मित कर रहे हैं। सच्चा धर्म कभी भी संकीण मनोवृत्ति एवं विचारों का नहीं हो सकता

है। आज हमें एक ऐसे धर्म की आवश्यकता है जो कि समाज में उच्च आदर्शो एवं विचारों को स्थापित करने में सफल हो सके ताकि एक स्वस्थ समाज का निर्माण हो सके।

धर्म का शाब्दिक अर्थः धर्म एक ऐसा शब्द है, जिसका प्रयोग संस्कृत साहित्य में विविध अर्थों मे हुआ है तथा यह भी नहीं कहा जा सकता है कि धर्म का एक निश्चित अर्थ है। पराशरस्मृति में इसका उल्लेख स्पष्ट है–

चतुर्णामपि वर्णानामाचारो धर्मपालकः।
आचारभ्रष्टदेहानां भवेद्धर्म पराङ्मुखमः।।[4]

अर्थात् चारों वर्णों को अपने आचार पर चलना ही धर्म का पालन है। यदि कोई भी व्यक्ति अपने आचार से भ्रष्ट हो गया तो, धर्म भी उससे मुंह मोड लेता है। अतः आचार व्यवहार और शिष्टाचार ही भारतीय संस्कृति और धर्म की सच्ची पहचान है। यही वास्तव में भारतीय संस्कृति के स्तम्भ हैं। और भी मनुस्मृ ति मे उल्लेख है–

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुः विद्या यशोबलम्।।[5]

अर्थात् जो व्यक्ति अपने से वृद्ध अर्थात् ज्ञान में बडे, या आयु में बडे व्यक्ति की सेवा करता है और नित्यप्रति उनको प्रणाम करता है तो उस व्यक्ति की आयु, विद्या और बल बढता है। तात्पर्य यह है कि जीवन में उन्नति के लिए नित्यप्रति प्रातःकाल अपने माता–पिता तथा घर में अपने से बडों के पैर छूकर और पूछकर ही कार्य किये जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त याज्ञवल्क्यस्मृति में धर्म विषयक कहा गया है–

वेदानुवचनेन यज्ञो ब्रह्मचर्य तपो दमः।
श्रद्धोपपवासः स्ववतन्त्रयमात्मनो ज्ञानहेतवः।।[6]

कि वेदों का पठन–पाठन, यज्ञ, ब्रंह्मचर्य, तप, दम, श्रद्धा, उपवास तथा आत्मा की स्वत्रन्त्रत ा – ये सभी ज्ञान प्राप्ति के साधन हैं। और भी मनुस्मृति में –

यतः सर्वेणेच्छसि ज्ञातुं यन्न लज्जति चाचरन।
येन तुष्यति चात्मास्य तत् सत्त्वगुणलक्षणम्।।[7]
ख्यापनेनानुतापेन तपसाध्यनेन च।
पापकृन्मुच्यते पापात् तथा दानेन चापदि ।[8]

अर्थात् जो मनुष्य कर्म को पूर्णतया जानना चाहता है और जिस कर्म को करते हुए उसकी आत्मा लज्जित नहीं होती, अपितु मन प्रसन्न होता है, तो उस कर्म को सत्वगुण का लक्षण मानना चाहिए। अपने पाप को प्रकट करने से , पाश्चाताप करने से, तप और स्वाध्याय से तथा संकट आने पर दान देने से पापी मनुष्य मुक्त हो जाता है। और भी दक्षस्मृति में उल्लेख है कि सुख की इच्छा करने वाला व्यक्ति दूसरे को भी अपने समान ही समझे क्योंकि जैसे अपनी आत्मा को सुख–दुःख होते हैं, उसी तरह दूसरों की आत्मा को भी होते है।[8] दया, लज्जा,

क्षमा, श्रद्धा, प्रज्ञा, त्याग, कृतज्ञता,– ये सब गुण जिस गृहस्थ में होते हैं। वह गृहस्थ में श्रेष्ठ माना जाता है।[10] याज्ञवल्क्यस्मृति में केवल विद्या ग्रहण पर जोर न देकर सदाचार इन दोनों पर जोर दिया गया है।[11] शंखस्मृति में स्पष्ट है –

माता पिता गुरूश्चैव पूजनीया सदा नृणाम्।
क्रियास्तस्याफलाः सर्वा यस्यैते नादृतास्त्रयः।।[12]

अर्थात् माता–पिता और गुरू ये तीनों सभी के लिए पूजनीय हैं। जो इन तीनों का आदर नहीं करता है, उसके सभी कर्म निष्फल हो जाते हैं।

इस तरह हम देखते हैं कि स्मृतियों का धर्म न तो मूर्तिपूजा है, न बाह्य आडम्बर और न ही नामस्मरण या संकीर्तन है, यह न तो देवी – देवतावाद है न कर्मकाण्ड है ब्लकि यह तो नैतिकता केन्द्रित जीवन का मार्ग है। यह नैतिक जीवन पद्धति को रेखांकित करता है। मनुस्मृति में धर्म के स्वरूप को स्पष्ट किया गया है–

चक्रिणो दशमीस्थस्य रोगिणों भारिणः स्त्रियः।
स्नातकतस्य च राज्ञस्य पन्था देयो वरस्य च।।[13]

अर्थात् रथ आदि पर सवार व्यक्ति को, वृद्ध को, रोगी को, बोझ उठाए हुए को, स्त्री को, स्नातक और राजा को पहले आगे जाने दिया जाना चाहिए। और यह तो अत्यधिक गौरव को बढाने वाला है – '**यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।**' अर्थात् जहाँ पर नारियों का सम्मान होता है, वहाँ पर देवताओं का निवास होता है और जहाँ पर नारियों का सम्मान नहीं होता वहाँ पर कोई कार्य सफल कहीं होता।

उपसंहार : इन ग्रन्थों के अनुसार धर्म मानव जाति के लिए एक ऐसा बहुमूल्य कर्तव्य है, जिसमें सद्गुणों का विकास होता है। इस प्रकार ये स्मृति ग्रन्थ समस्त मानव जाति एवं समाज के लिए विशेष महत्वपूर्ण है। इससे व्यक्ति का हित होने के साथ–साथ एक स्वस्थ समाज एवं राष्ट्र का निर्माण होना तय है। इस प्रकार मन, वचन, बुद्धि और शरीर से दुष्कर्मों से अलग रहने का संदेश मनुस्मृति से मिलता है जो समाज और प्रत्येक मनुष्य के लिए निश्चित रूप से कल्याणकारी है। सत्कर्मों का पालन करने से ही मानव जीवन को सफल और सार्थक बनाया जा सकता है। तात्पर्य यह है कि मन से किये गये कर्मों का मन से, वाणी से किये गये कर्म का फल वाणी से और शरीर से किये गये कर्म का फल शरीर से ही भोगना पडता है। मनुस्मृति में विभिन्न प्रकार की ऐसी महत्वपूर्ण नैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक आदि विविध प्रकार की शिक्षा है जो मानव जाति के नैतिकता एवं चारित्रिक विकास में अत्यधिक उपयोगी एवं लाभदायक हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मनुस्मृति, 2.12।
2. मनुस्मृति, 6.2 ।
3. पराशरस्मृति, 1.36।
4. पराशरस्मृति, 1.37।

5. मनुस्मृति, 2.221।
6. याज्ञवल्क्यस्मृति प्राय0, 190।
7. मनुस्मृति, 12.37।
8. मनुस्मृति, 11.228।
9. दक्षस्मृति, 3.21।
10. दक्षस्मृति, 2.55।
11. याज्ञवल्क्यस्मृति आचारसंहिता, 200।
12. शंखस्मृति, 3.3
13 मनुस्मृति, 2.138